Dr. Vandana Suman
Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara

M. A II sem.

CC-07 : Gandhian Philosobhy

"Cardinal Virtues" (प्रमुख नैतिक विशेषताएँ) 1

व्यक्ति और समाज का अस्तित्व तथा उसकी प्रगति नैतिकता पर आश्रित है। भारतीय दर्शन में धर्म का गहरा संबंध नैतिकता से बतलाया गया है। इसलिए महात्मा गाँधी ने भी नैतिकता को धर्म का सारतत्व माना है। महात्मा गाँधी ने हिन्दू-धर्म की आधारभूत नैतिकता को समझा और इसीलिए नैतिकता को धर्म का सारतत्व माना। गाँधी जी ने ईश्वर को पाने के लिए सत्य तथा प्रेम की आवश्यकता को महसूस किया है। प्रेम अहिंसा का भावात्मक रूप है। महात्मा गाँधी ने अहिंसा को नैतिक सद्गुणों में सर्वोच्च स्थान दिया है।

अध्यात्मवादी जहाँ ईश्वर की प्राप्ति हेतु नैतिक सद्गुणों की आवश्यकता को महसूस करते हैं वहीं भौतिकवादी एक व्यवस्था के लिए नैतिक सद्गुणों की चर्चा करते हैं। महात्मा गाँधी ने छः नैतिक सद्गुणों की चर्चा की है—

1. अहिंसा (Non-Violence)
2. सत्य (Truth)
3. अस्तेय (Non-steling)
4. अपरिग्रह (Non-acceptance)
5. ब्रह्मचर्य (Calibacy)
6. अभय (Fearlessness)

1. अहिंसा (Non-Violence)

महात्मा गाँधी के अनुसार अहिंसा एक महत्वपूर्ण नैतिक सद्गुण है जिसका अर्थ है हिंसा का निषेध। इस संदर्भ में महात्मा गाँधी मनु की अपेक्षा जैनों के आदर्श के अधिक समीप हैं। लेकिन इन्होंने जैनियों के अतिवाद को स्वीकार नहीं किया है।

अहिंसा को महात्मा गाँधी जी ने दो रूपों में रखा है— 1. भावात्मक विचार जो कि प्रेम है और 2. निषेधात्मक विचार जो कि हिंसा का निषेध करता है। प्रेम एक

ऐसी स्थिति है। समाजसेवा के मूल में प्रेम ही है। अहिंसा ईसा के Love से ज्यादा व्यापक है। ईसा ने कहा है — "Love thy neighbour" अगर इसका व्यापक अर्थ भी लिया जाए तो भी यही कहा जा सकता है कि मानव के अतिरिक्त प्राणी जीवों के प्रति भी प्रेम की बात कही गई है।

गाँधी जी का अहिंसा का विचार बहुत ही व्यापक है। मन, वचन तथा कर्म किसी का आघात न होने देना अहिंसा है। गाँधी जी का अहिंसा एक सक्रिय बल है और निर्बलों का ~~[illegible]~~ अस्त्र नहीं बल्कि वीरों का अस्त्र है।

महात्मा गाँधी जी ने स्पष्ट शब्दों में कहा है — "अहिंसा का मेरा व्रत अत्यन्त ही सक्रिय एवं गतिशील है जिसमें आचरण एवं कमजोरी का कोई स्थान नहीं है।"

असाधारण परिस्थिति में महात्मा गाँधी हिंसा की भी आज्ञा देते हैं। अहिंसा वीरत्व की चरम सीमा है। मृत्यु से भयभीत मनुष्य अहिंसक नहीं हो सकता है। अहिंसा बुराइयों का सामना करने के लिए एक strong weapon है। कायरता और अहिंसा दोनों साथ-साथ नहीं चल सकता है। अहिंसा न्याय को पाने के लिए है अन्याय के प्रति समर्पण नहीं। अहिंसा जीवन से पलायन नहीं है। गाँधी जी ने अहिंसा को राजनीतिक पद्धति के रूप में प्रयुक्त किया है। गाँधी जी का विचार था कि हम अहिंसक प्रेम के द्वारा आक्रमणकारी दिल में भी प्रेम उत्पन्न कर सकते हैं। वही क्षमा है तथा नैतिक प्रतिशोध भी।

इस प्रकार हम पाते हैं कि

गाँधी जी का अहिंसा हिन्दू धर्म में प्रचलित परम्परागत अर्थों से भिन्न है तथा उसका व्यावहारिक मूल्य बहुत अधिक है। हालाँकि गाँधी जी ने अहिंसा को अपवाद स्वीकार किया है, परन्तु कभी भी उन्होंने हिंसा को बढ़ावा नहीं दिया।

2. सत्य (Truthfulness)

महात्मा गाँधी जी ने सत्य को दो अर्थों में रखा है—

1. metaphysical sense
2. Ethical sense

1. metaphysical sense में चरमसत्ता या God ही सत्य है। 2. Ethical sense में हम सत्य को मूल्य के रूप में स्वीकार करते हैं। मनुष्य को मन वचन कर्म से सत्य का पालन करना चाहिए। जो सत्य शुभ है तथा प्रिय वचन का है तथा जिसकी उपयोगिता दूसरों के हित के लिए हो। मनुष्य को अपने विचारानुसार ही कार्य करना चाहिए। यदि उसके सिद्धान्तों से कोई गलती होती है तो उसका सत्य के प्रति खोज स्वतः ही उसे ठीक कर देता है। गाँधी जी ने सत्य को ही ईश्वर कहा है। इन्होंने अहिंसा को सत्य का पर्याय माना है। अपनी आत्मकथा में गाँधी जी ने लिखा है "सत्य का पूर्ण आभास अहिंसा के पूर्ण साक्षात्कार से ही संभव है।"

अहिंसा की भाँति ही सत्य का रास्ता भी संकरा और सीधा है।

3. अस्तेय (non stealing)

साधारणतः अस्तेय का अर्थ है— दूसरे की चीजें बिना पूछे नहीं लेना। विशिष्ट अर्थ में अस्तेय का अर्थ है— ऐसी चीज या अधिक सम्पत्ति को नहीं रखना जिसकी आवश्यकता नहीं है। गाँधी जी ने अस्तेय को दोनों ही अर्थों में लिया है।

गाँधी जी ने अस्तेय को जैन-

दर्शन के प्रभाव में आकर स्थापित किया। जैन-दर्शन में चोरी को भी हिंसा का स्वरूप माना गया है। गांधी जी का कहना है कि अस्तेय का अर्थ है आवाज का विरोध करना। जरूरत से अधिक नहीं रखना अस्तेय है।

4. अपरिग्रह (Non-acceptance)

अस्तेय निषेधात्मक रूप है। और अपरिग्रह भावात्मक रूप है। अपरिग्रह का अर्थ है जो कुछ भी है उसी से संतोष करना।

गांधी जी ने अपरिग्रही होने का व्रत लिया था और न्यूनतम आवश्यकताओं में जीवन बिताने का संकल्प लिया था। परन्तु पूर्ण रूपेण अपरिग्रह संभव नहीं है। क्योंकि जबतक हम जीवित हैं, सारी चीजों से अपने आप को वंचित नहीं कर सकते हैं। अतः जितना हो सके हम व्यवहार में अपरिग्रह को करें।

मार्क्स का कहना है कि प्रत्येक को अपनी जरूरत के अनुसार सामान रखना चाहिए और प्रत्येक को अपनी योग्यता के अनुसार खर्च करना चाहिए। (Each according to his needs, each according to his ability.)

जरूरत से अधिक संग्रह को समाज को देना बहुत बड़ा गुण है, लेकिन इससे भी बड़ा गुण है किसी श्रेष्ठ कार्य के लिए अपने शरीर के किसी अंग का दान करना। यह एक supreme moral act है।

इस प्रकार अपरिग्रह को अपनाकर महात्मा गांधी जी मार्क्स के निकट आते हैं।

5. ब्रह्मचर्य (Celibacy) —

साधारण अर्थ में ब्रह्मचर्य का अर्थ इन्द्रिय निग्रह से वंचित रहना है।

ब्रह्मचर्य शब्द दो शब्दों के योग से बना है — ब्रह्म + चर्य । गाँधी जी के अनुसार ब्रह्म का अर्थ है Truth या सत्य और चर्य का अर्थ है — आचरण । इस प्रकार ब्रह्मचर्य का शाब्दिक अर्थ हुआ अपने आचरण को सत्य द्वारा नियन्त्रित करना । भारतीय परम्परा के अनुसार जीवन का प्रारम्भिक 25 वर्षों का काल ब्रह्मचर्य व्रत के पालन का काल है । गाँधी जी का कहना है कि सत्य और अहिंसा का व्रत बिना ब्रह्मचर्य संभव नहीं ।

यहाँ तक तो महात्मा गाँधी जी ने जैन के पंचमहाव्रत को ही व्यावहारिक रूप प्रदान किया है । लेकिन अब इसमें अभय को भी जोड़ देते हैं ।

6. अभय — (Fearlessness)

अभय का उल्लेख हम उपनिषद् और प्राचीन शास्त्रों में भी पाते हैं । अभय के बिना सत्य की खोज अहिंसा का पालन नहीं हो सकता है । गाँधी जी ने अपनी डायरी में लिखा है "अभय का अर्थ है — सभी का भय — मौत का भय, धन - दौलत के लूट जाने का भय, अप्रतिष्ठा का भय, अपमान का भय, शस्त्र प्रहार का भय आदि से मुक्त हो जाना ।"

अतः कायर व्यक्ति कभी भी नैतिकता का पालन नहीं कर सकता है । सदाचार और सद्गुण ग्रहण करने के लिए भी अभय आवश्यक है, इसके बिना भला सत्य का अन्वेषण और प्रेम की साधना कैसे हो सकेगी ।

उपर्युक्त व्रतों को गाँधीजी ने अपने आश्रमवासियों को अपनाने की सलाह दी है । ईसा के सामने आदि

30 SATURDAY
Week 48
Day (334-031)

गाईड ? तथा तालमुद के Kingdom of God is withing you. से प्रेरणा लेकर व्यक्ति जीने हेतु सद्गुणों को जीवन में अपनाने की संबोध करती है। प्राचीन धर्म शास्त्र बौद्ध धर्म तथा जैन - दर्शन से प्रेरित होकर उन्होंने इन नैतिक सद्गुणों को नया अर्थ प्रदान किया है। महात्मा गांधी जी के अनुसार इन नैतिक सद्गुणों को मन, वचन और कर्म के द्वारा कार्यान्वित करने की आवश्यकता है। विमुक्तता की प्राप्ति ही नैतिक क्रिया कलापों का उद्देश्य है और पूर्ण विमुक्तता तभी प्राप्त हो सकती है, जबकि व्यक्ति मन वचन और कर्म तीनों से ही सच्चरित्र हो।

Sunday 01